उनमुक्त द्वार की नीति
[open Door policy]

Ashish Kumar Thakur
B.A. II, History (H), paper-IV
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

चीन और अमेरिका :-

चीन में यूरोपीय राज्यों की छीना-झपटी देखकर संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए चिंतित होना बिल्कुल स्वाभाविक था। पश्चिम देशों में यदि चीन का किसी राज्य से थोड़ा बहुत अच्छा संबंध था तो अमेरिका ही था। 1884 ई० में निरन्तर उसनें चीन के व्यापार के विकास में सहायता की थी। अमेरिका ने चीन के साथ युद्ध नही किया था।

लेकिन अमेरिका अधिक दिनों तक इस संयम की नीति से काम नही चला सका। 1898 ई० में उसनें स्पेन को हराकर फिलिपाइन्स पर अधिकार कर लिया था। इस हालत में पुर्वी एशिया की राजनीतिक गतिविधि में उसकी रुचि का बढ़ाना स्वाभाविक था। इसके अतिरिक्त, अमेरिका एक महान औद्योगिक देश बन गया था। और उसे बाहर बाजारों की आवश्यकता थी। ऐसी स्थिति में वह चीन की लूट-खसोट को चुप-चाप नही देख सकता था।

जब फ्रांस ने क्वांगसी पर, जापान ने फुकियन पर, ब्रिटेन ने यांगत्सी घाटी पर और रूस ने मंचूरिया पर अधिकार जमा रखा था। इस घटना से इस बात से सम्भावना बढ़ गई थी कि उपर्युक्त लुटेरे देश अपने-अपने अधिकृत देश/प्रदेश में ऐसी शत्रुतापूर्ण चुंगी व्यवस्था रखते जिसमे अमेरिका के लिए चीन मे व्यापार करना कठिन हो जाता। उपर अमेरिका चीन मे अपना प्रभाव क्षेत्र भी नही कायम कर सकता था।

फिलिपाइन्स द्वीप समूह पर जब अमेरिका ने अधिकार किया तो उसके कुछ हलकों में इसका तीव्र विरोध हुआ था। कुछ अमेरिकियों ने इसे गणराज्य की मौलिक नीति के विरुद्ध बताया। अतः स्पष्ट था कि यदि अमेरिका चीन में अपना उपनिवेश कायम करने का प्रयास करता तो अमेरिका मे पुनः इसका विरोध होता।

जॉन हे द्वारा उन्मुक्त द्वार नीति का प्रतिपादन :-

1898 ई० मे जॉन हे संयुक्त राज्य अमेरिका का विदेश सचिव नियुक्त हुआ। चीन मे अमेरिका हितों की रक्षा के लिए उसनें एक नई नीति का प्रतिपादन किया, जिसे 'उन्मुक्त द्वार की नीति' कहते हैं। 6 sep 1899 को उसने ब्रिटेन, जर्मनी और रूस की सरकारों का एक गश्ती पत्र भेजा और नवम्बर मे जापान, इटली तथा फ्रांस की सरकारों को लिखा और उसने यह घोषणा करने की माँग की कि चीन में सभी देशों को व्यापार करने की समान सुविधाएँ दी जाए, सभी से समान सीमा शुल्क और बंदरगाह का किराया लिया जाय और इस संबंध मे किसी एक देश के साथ दुसरे की अपेक्षा रियायत नही किया जाय। और चीन के सीमा शुल्क मे चीन को भी हिस्सा दिया जाय।

Ashish

और चीनी सरकार का चुंगी वसूल करने का अधिकार अक्षुण्ण रहे। दुसरे शब्दों मे, सचिव हे ने उन देशो से, जो चीन की छाती पर चढ़ बैठे थे, यह घोषणा करने को कहा कि चीन के साथ मुक्त व्यापार की नीति बरती जाय। और सभी देशो के समान रूप से सीमा शुल्क और चुंगी वसूल की जाय।

इस गश्ती पत्र में कहा गया था कि " हमारी सरकार हृदय से यह चहाती है कि अमेरिका के नागरिकों के साथ चीन मे उन देशो के द्वारा जिन्होंनें अपने प्रभाव क्षेत्र कायम कर लिया है और जिनका चीन के कुछ भागो पर अधिकार हो गया है, ऐसा अन्यायपूर्ण व्यवहार ना हो जिससे हमारे नागरिक को शिकायत का मौका मिले। हमारी सरकार यह भी चहाती है कि चीन में संसार के प्रत्येक देश को व्यापार करने की समान सुविधाऐं हो। हम चहाते है कि ऐसें सभी अवसरों को तुरन्त हटा दिया जाय, जिससे अंतराष्ट्रीय कटुता उत्पन्न हो सकती है।"

20 March 1900 को जॉन हे ने यह घोषणा की उसे " सभी देशो से संतोषजनक आश्वासन मिले है।" इस राजनायिक झांसे मे और कोई विदेशी राष्ट्र तो नही आया, लेकिन स्वतंत्रता प्रेमी और मुक्ति-आंदोलन के समर्थक लोग अवश्य धोखे मे आ गए। यह धारणा बन गई कि अमेरिका एक उपनिवेशवाद-विरोधी देश है तथा उसनें अपनें राजनायिक प्रतिभा से चीन को लुटेरे देशों के कुत्सित देशो से बचा लिया। कुछ लोग इस भुलावे मे अवश्य आ गया कि अमेरिका का उद्देश्य चीनी साम्राज्य को टुकड़े-टुकड़े होनें से बचाना था।

तथ्य तो यह है कि इसमे कोई ऐसी बात नही था इसमें तनिक भी संदेह नही करना चाहिए कि मूल रूप से एक साम्राज्यवादी देश होने के नातें अमेरिका द्वारा इस सिद्धान्त का प्रतिपादन अपनें लाभ को दृष्टि मे रख कर किया गया था और इस मांग के पीछे चीन मे अमेरिका का प्रभाव क्षेत्र बनानें की इच्छा थी।

चीन का विघटन नही हुआ था दिनो चीन की कुछ रक्षा हो सकी तो वह अमेरिका की कृपा से नही, बल्कि युरोपीय देशो की अपनी खींचातानी के कारण।

Ashish